19-06-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

**"मीठे बच्चे - शिवबाबा तुम्हारे फूल आदि स्वीकार नहीं कर सकते क्योंकि वह पूज्य वा पुजारी नहीं बनते, तुम्हें भी संगम पर फूल हार नहीं पहनने हैं"**

**प्रश्नः भविष्य राज्य तख्त के अधिकारी कौन बनते हैं?**

**उत्तर:-** जो अभी मात-पिता के दिलतख्त को जीतने वाले हैं, वही भविष्य तख्तनशीन बनते हैं।

वन्डर है बच्चे मात-पिता पर भी विजय प्राप्त करते हैं। मेहनत कर मात-पिता से भी आगे जाते हैं।

**गीत:-छोड़ भी दे आकाश सिंहासन...** Click

छोड़ भी दे आकाश सिंघासन
फिर धरती पर आ जा रे
छोड़ भी दे आकाश सिंघासन
फिर धरती पर आ जा रे
फिर धरती पर आ जा रे
फिर धरती पर आ जा रे
फिर धरती पर आ जा रे

जब जब विपद पड़ी जग माई
तू ही बना रखवाला सांई
पाप कपट की फ़ैल रही है
पाप कपट की फ़ैल रही है
इस जग में फिर से परछाई
गीता का उपदेश सुनाने
रूप बदल कर आजा रे
रूप बदल कर आजा रे
रूप बदल कर आजा रे

छोड़ भी दे आकाश सिंघासन
फिर धरती पर आ जा रे
फिर धरती पर आ जा रे
रूप बदल कर आजा रे
आजा रे आजा रे
आजा रे आजा रे
आजा रे आजा रे
आजा रे आजा रे

यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत ।
अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम्
..

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

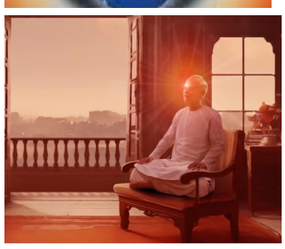

**ओम् शान्ति।** मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों ने गीत सुना। इस गीत से सर्वव्यापी का ज्ञान तो उड़ जाता है। याद करते हैं, अब भारत बहुत दु:खी है। ड्रामा अनुसार यह सब गीत बने हैं। दुनिया वाले नहीं जानते। बाप आते हैं पतितों को पावन करने वा दु:खियों को दु:ख से लिबरेट कर सुख देने लिए। बच्चे जान गये हैं - वही बाप आया हुआ है। बच्चों को पहचान मिल गई है। स्वयं बैठ बतलाते हैं - मैं साधारण तन में प्रवेश कर सारी सृष्टि के आदि-मध्य-अन्त का राज़ सुनाता हूँ। सृष्टि एक ही है, सिर्फ नई और पुरानी होती है। जैसे शरीर बचपन में नया होता है फिर पुराना होता है। नया शरीर, पुराना शरीर दो शरीर तो नहीं कहेंगे। है एक ही सिर्फ नये से पुराना बनता है। वैसे दुनिया एक ही है। नये से अब पुरानी होती है। नई कब थी? यह फिर कोई बता न सके। बाप आकर समझाते हैं, बच्चे जब नई दुनिया थी तो भारत नया था। सतयुग कहा जाता था। वही भारत फिर पुराना बना है। इसको पुरानी, ओल्ड वर्ल्ड कहा जाता है। न्यु वर्ल्ड से फिर ओल्ड बनी है फिर उनको नया


























Points: ज्ञान रणा सेवा M.imp.

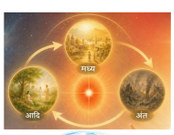

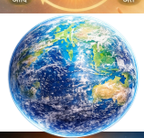

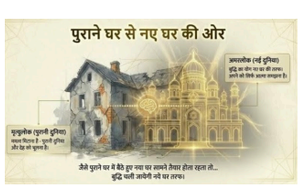

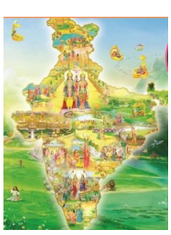

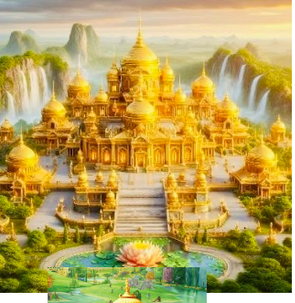

19-06-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति   मधुबन

जरूर बनना है। नई दुनिया का बच्चों ने साक्षात्कार किया है। अच्छा उस नई दुनिया के मालिक कौन थे? बरोबर यह लक्ष्मी-नारायण थे। आदि सनातन देवी-देवता उस दुनिया के मालिक थे। यह बाप बच्चों को समझा रहे हैं। बाप कहते हैं - अब निरन्तर यही याद करो। बाप परमधाम से हमको पढ़ाने, राजयोग सिखाने आये हुए हैं। महिमा सारी उस एक की है, इनकी महिमा कुछ नहीं है। इस समय सब तुच्छ बुद्धि हैं, कुछ नहीं समझते इसलिए मैं आता हूँ तब तो गीत भी बनाया हुआ है। सर्वव्यापी का ज्ञान तो उड़ जाता है। हर एक का पार्ट अपना-अपना है।










Feel the Force

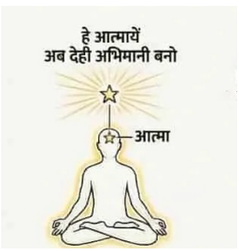

बाप बार-बार कहते हैं - देह-अभिमान छोड़ तुम आत्म-अभिमानी बनो और आरगन्स द्वारा शिक्षा धारण करो। भल इस बाबा को चलते-फिरते देखते हो परन्तु याद शिवबाबा को करो। ऐसे ही समझो शिवबाबा ही सब कुछ करते हैं। ब्रह्मा है नहीं। भल





Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

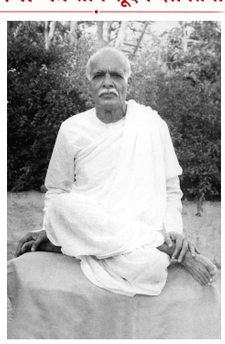

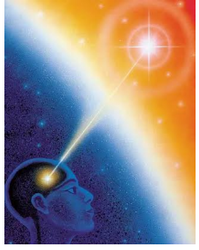

इनका रूप इन आंखों से दिखाई पड़ता है। तुम्हारी बुद्धि शिवबाबा की तरफ जानी चाहिए। शिवबाबा न हो तो इनकी आत्मा, इनका शरीर कोई काम का नहीं। हमेशा समझो इसमें शिवबाबा है। वह इन द्वारा पढ़ाते हैं। तुम्हारा यह टीचर नहीं है। सुप्रीम टीचर वह है। याद उनको करना है। कभी भी जिस्म को याद नहीं करना है। बुद्धियोग बाप के साथ लगाना है। बच्चे याद करते हैं फिर से आकर ज्ञान-योग सिखाओ, परमपिता परमात्मा के सिवाए कोई राजयोग सिखा न सके। बच्चों की बुद्धि में है वही बैठ गीता का ज्ञान सुनाते हैं फिर यह नॉलेज प्राय:लोप हो जाता है। वहाँ दरकार ही नहीं। राजधानी स्थापन हो गई। सद्गति हो जाती है। ज्ञान दिया जाता है दुर्गति से सद्गति होने के लिए। बाकी वह तो सब हैं भक्ति मार्ग की बातें। मनुष्य जप-तप, दान-पुण्य आदि जो कुछ करते हैं, सब भक्ति मार्ग की बातें हैं, इससे मुझे कोई मिल नहीं सकता। आत्मा के पंख टूट गये हैं। पत्थरबुद्धि बन गई है। पत्थर से फिर पारस बनाने मुझे आना पड़े। बाप कहते हैं - अब कितने मनुष्य हैं। सरसों मिसल

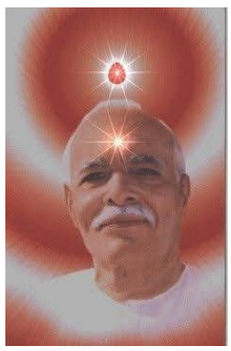

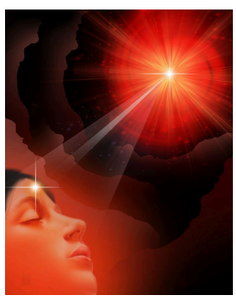

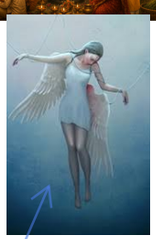

Points: ज्ञा सेवा M.imp.

Point to ponder deeply...

How lucky and Great we are...!

संसार भरा हुआ है। अब सब खत्म हो जाने हैं। सतयुग में तो इतने मनुष्य होते नहीं। नई दुनिया में वैभव बहुत और मनुष्य थोड़े होंगे। यहाँ तो इतने मनुष्य हैं जो खाने के लिए भी नहीं मिलता है।

पुरानी रेतीली जमीन है फिर नई हो जायेगी। वहाँ है ही एवरीथिंग न्यु। नाम ही कितना मीठा है - हेविन, बहिश्त, देवताओं की नई दुनिया। पुरानी को तोड़ नई में बैठने की दिल होती है ना। अब है नई दुनिया, स्वर्ग में जाने की बात। इसमें पुराने शरीर की कोई वैल्यु नहीं है। शिवबाबा को तो कोई शरीर है नहीं।

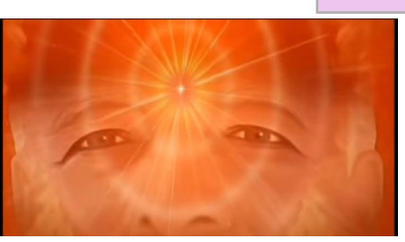

अकाय

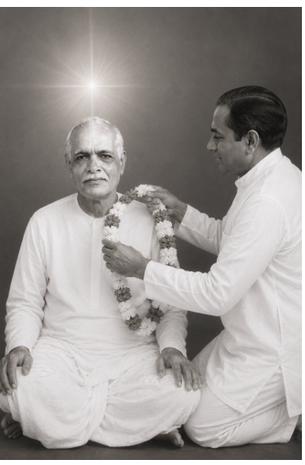

बच्चे कहते हैं - बाबा को हार पहनायें। परन्तु इनको हार पहनायेंगे तो तुम्हारा बुद्धियोग इसमें चला जायेगा। शिवबाबा कहते हैं हार की दरकार नहीं है। तुम ही पूज्य बनते हो। पुजारी भी तुम बनते हो। आपेही पूज्य आपेही पुजारी। तो अपने ही चित्र की पूजा करने लगते हैं। बाबा कहते हैं मैं न पूज्य बनता हूँ, न फूल आदि की दरकार है। मैं

How humble my baba is...!

क्यों यह पहनूँ इसलिए कभी फूल माला आदि लेते नहीं हैं। तुम पूज्य बनते हो फिर जितना चाहिए उतना फूल पहनना। मैं तो तुम बच्चों का मोस्ट बील्वेड ओबीडियन्ट फादर भी हूँ, टीचर भी हूँ, सर्वेन्ट भी हूँ। बड़े-बड़े रॉयल आदमी जब नीचे सही डालते हैं तो लिखते हैं मिन्टो, करजेन आदि... viceroys of British india अपने को लार्ड कभी नहीं लिखेंगे। यहाँ तो श्री लक्ष्मी-नारायण, श्री फलाना। एकदम श्री अक्षर डाल देते हैं। तो बाप बैठ समझाते हैं अब इस शरीर को याद नहीं करो। अपने को आत्मा निश्चय करो और बाप को याद करो। इस पुरानी दुनिया में आत्मा और शरीर दोनों ही पतित हैं। सोना 9 कैरेट होगा तो जेवर भी 9 कैरेट। सोने में ही खाद पड़ती है। आत्मा को कभी निर्लेप नहीं समझना चाहिए।

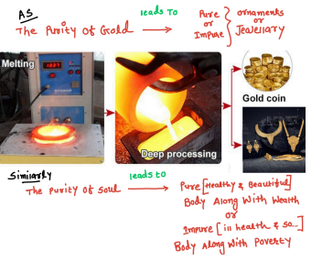


यह ज्ञान तुमको अभी है। तुम आधाकल्प 21 जन्म लिए प्रालब्ध पाते हो तो कितना पुरुषार्थ करना चाहिए! परन्तु बच्चे घड़ी-घड़ी भूल जाते हैं। शिवबाबा, ब्रह्मा द्वारा हमको शिक्षा दे रहे हैं। ब्रह्मा की आत्मा भी उनको याद करती है। ब्रह्मा, विष्णु, शंकर हैं सूक्ष्मवतनवासी। बाप पहले सूक्ष्म सृष्टि

Point to ponder deeply...

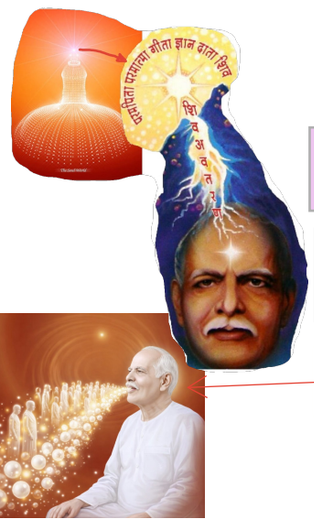




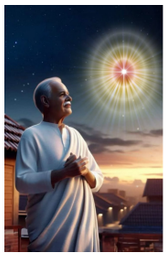

रचते हैं, निर्वाणधाम ऊंच ते ऊंच धाम है। आत्माओं का निर्वाणधाम सबसे ऊंच है। एक भगवान को सब भक्त याद करते हैं। परन्तु तमोप्रधान बन गये हैं तो बाप को भूल, ठिक्कर-भित्तर सबकी पूजा करते रहते हैं। हम जानते हैं जो कुछ चलता है ड्रामा शूट होता जाता है। ड्रामा में एक बार जो शूटिंग होती है। Example समझो (1) बीच में कोई पंछी आदि उड़ता है तो वही घड़ी-घड़ी रिपीट होता रहेगा। (2) पतंग उड़ता हुआ शूट हो गया तो फिर -फिर रिपीट होता रहेगा। यह भी ड्रामा का सेकेण्ड -सेकेण्ड रिपीट होता जाता है। शूट होता रहता है। यह बना बनाया ड्रामा है। तुम एक्टर्स हो सारे ड्रामा को साक्षी हो देखते हो। एक-एक सेकेण्ड ड्रामा अनुसार पास होता है। पत्ता हिला, ड्रामा पास हुआ। ऐसे नहीं पत्ता-पत्ता भगवान के हुक्म से चलता है। नहीं, यह सब ड्रामा में नूँध है। इनको अच्छी रीति समझना पड़ता है। बाप ही आकर राजयोग सिखलाते हैं और ड्रामा की नॉलेज देते हैं। चित्र भी कितने अच्छे बने हुए हैं। संगमयुग पर घड़ी का कांटा भी लगा हुआ है। कलियुग अन्त

सतयुग आदि का संगम है। अभी पुरानी दुनिया में अनेक धर्म हैं। नई दुनिया में फिर यह नहीं होंगे। तुम बच्चे हमेशा ऐसे समझो - हमको बाप पढ़ाते हैं, हम गॉडली स्टूडेन्ट हैं। भगवानुवाच - मैं तुमको

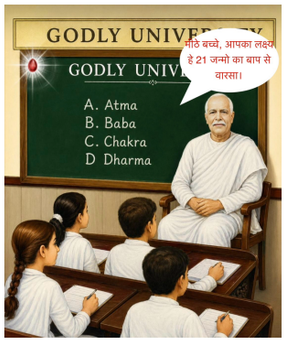

राजाओं का राजा बनाता हूँ। राजे लोग भी लक्ष्मी-नारायण को पूजते हैं। तो उन्हों को पूज्य बनाने वाला मैं हूँ। जो पूज्य थे वह अब पुजारी हो गये हैं। तुम बच्चे समझ गये हो हम सो पूज्य थे फिर हम सो पुजारी बने। बाबा तो नहीं बनते हैं। बाबा कहते हैं, न मैं पुजारी हूँ, न पूज्य बनता हूँ इसलिए मैं न

हार पहनता हूँ, न पहनाने पड़ते हैं। फिर हम क्यों फूलों को स्वीकार करें। तुम भी स्वीकार नहीं कर सकते हो। कायदे अनुसार उन देवताओं का हक है, उनकी आत्मा और शरीर पवित्र है। वही हकदार हैं

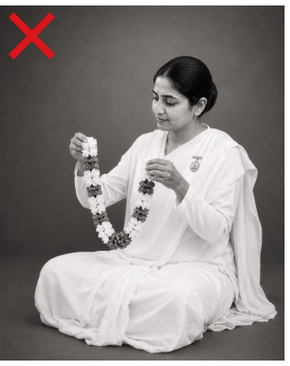

फूलों के। वहाँ स्वर्ग में तो हैं ही खुशबूदार फूल। फूल होते ही हैं खुशबू के लिए। पहनने के लिए भी होते हैं। बाप कहते हैं - अभी तुम बच्चे विष्णु के गले का हार बनते हो। नम्बरवार तुमको तख्त पर बैठना है। जिन्होंने जितना कल्प पहले पुरुषार्थ किया है, अब करते हैं और करने लग पड़ेंगे।

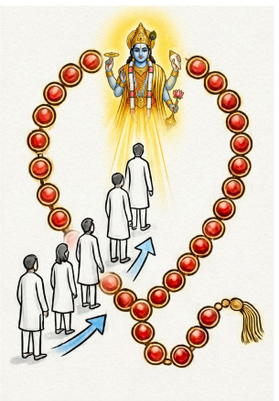

नम्बरवार तो हैं। बुद्धि कहती है फलाना बच्चा बहुत सर्विसएबुल है। जैसे दुकान में होता है, सेठ बनते हैं, भागीदार बनते हैं, मैनेजर बनते हैं। नीचे वालों को भी लिफ्ट मिलती है। यह भी ऐसे है। तुम बच्चों को भी मात-पिता पर जीत पानी है। तुम

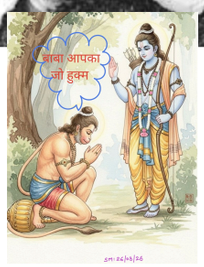


वन्डर खाते हो - मात-पिता से आगे कैसे जा सकते हैं। बाप तो बच्चों को मेहनत कर लायक बनाते हैं, तख्तनशीन बनाने लिए इसलिए कहते हैं, अब हमारे दिल रूपी तख्त पर जीत पहनने से भविष्य के तख्तनशीन बनेंगे। पुरुषार्थ इतना करो, जो नर से नारायण बनो। एम ऑब्जेक्ट मुख्य है ही एक, फिर किंगडम स्थापन हो रही है तो उसमें वैरायटी पद है।

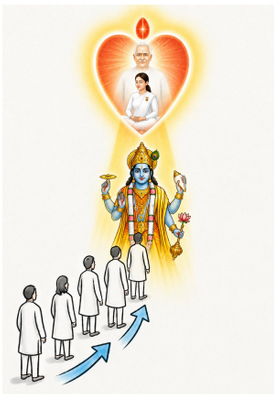

तुम्हें माया को जीतने का पूरा-पूरा पुरुषार्थ करना है। बच्चों आदि को भी भल प्यार से चलाओ परन्तु ट्रस्टी होकर रहो। भक्ति मार्ग में कहते थे ना - प्रभू यह सब आपका दिया हुआ है। आपकी अमानत

आपने ले ली। अच्छा फिर रोने की बात ही नहीं परन्तु यह तो है ही रोने की दुनिया। मनुष्य कथायें बहुत सुनाते हैं। मोहजीत राजा की कथा भी सुनाते हैं। फिर कोई दु:ख फील नहीं होता है। एक शरीर छोड़ जाए दूसरा लिया। वहाँ कभी कोई बीमारी आदि होती नहीं। एवरहेल्दी, निरोगी काया रहती है, 21 जन्म के लिए। बच्चों को सब साक्षात्कार होता है। वहाँ की रसमरिवाज कैसे चलती है, क्या ड्रेस पहनते हैं। स्वयंवर आदि कैसे होते हैं - सब बच्चों ने साक्षात्कार किया है। वह पार्ट सब बीत गया। उस समय इतना ज्ञान नहीं था। अब दिन-प्रतिदिन तुम बच्चों में ताकत बहुत आती जाती है। यह भी सब ड्रामा में नूँधा हुआ है। वन्डर है ना। परमपिता परमात्मा का भी कितना भारी पार्ट है। खुद बैठ समझाते हैं भक्ति मार्ग में भी ऊपर बैठ मैं कितना काम करता हूँ। नीचे तो कल्प में एक ही बार आता हूँ। बहुत, निराकार के पुजारी भी होते हैं परन्तु निराकार परमात्मा कैसे आकर पढ़ाते हैं, यह बात गुम कर दी है। गीता में भी श्रीकृष्ण का नाम डाल दिया है तो निराकार से

**मोहजीत राजा की कथा**

एक बार एक राजकुमार अपने कई सैनिकों के साथ शिकार पर गया। वह बहुत अच्छा शिकारी था। शिकार के पीछे वह इतना दूर निकल गया कि सारे सिपाही पीछे छूट गये। अकेले पड़ने का एहसास होते ही वह रुक गया। उसे प्यास भी लग रही थी। उसे पास में ही एक कुटिया दिखाई दी। वहाँ एक सन्त ध्यान-मग्न होकर बैठे थे। राजकुमार ने संत के पास जाकर पानी माँगा। सन्त ने राजकुमार का परिचय पूछा। राजकुमार ने सन्त से कहा कि वह एक राजा का लड़का है जिसने मोह को जीत लिया है। सन्त बोला – असंभव। एक राजा और मोह पर विजयी? यहाँ मैं एक संन्यासी हूँ तब भी मोह को जीत नहीं पा रहा हूँ और तुम कहते हो कि तुम्हारे पिता जी एक राजा हैं और मोह को जीत चुके हैं। राजकुमार ने कहा, न केवल मेरे पिता जी बल्कि सारी प्रजा ने भी मोह को जीत रखा है। सन्त को इसका विश्वास नहीं हुआ तो राजकुमार ने कहा कि आप चाहें तो इस बात की परीक्षा ले लें। सन्त ने राजकुमार की कमीज़ माँगी और उसे कुछ और पहनने को दिया। सन्त ने तब एक जानवर को मार कर उसके खून में राजकुमार की कमीज़ को डुबोया और वह शहर में चिल्लाता हुआ गया कि राजकुमार को एक शेर ने मार दिया। शहर के लोग कहने लगे – अगर वह चला गया तो क्या हुआ। आप क्यों चिल्ला रहे हो? वह उसका भाग्य था। सन्त ने सोचा कि प्रजा नहीं चाहती होगी कि राजकुमार भविष्य में राजा बने इसलिए इस तरह की प्रतिक्रिया व्यक्त कर रही है। सन्त महल में गया और राजकुमार की मौत की बात उसके भाई और बहन को सुनाई। उन्होंने कहा कि अब तक वह हमारा भाई था, अब किसी और का भाई बन जायेगा। कोई हमेशा के लिए साथ तो नहीं रह सकता इसलिए रोने और चिल्लाने की आवश्यकता नहीं है। सन्त को लगा कि बहन को दूसरा भाई अधिक पसंद है और भाई खुश है कि उसे अब राज्य मिलेगा इसलिए दोनों ने ऐसी प्रतिक्रिया व्यक्त की। फिर वह पिता के पास गया और खबर सुनाई। पिता बोले, आत्मा तो अमर और अविनाशी है इसलिए चिल्लाने की कोई जरूरत नहीं है। वह मेरा पुत्र था इसलिए मैंने सोचा कि वह राजा बनने वाला है लेकिन अब दूसरे पुत्र को राज्य मिलेगा। मैं उसे वापस नहीं ला सकता हूँ इसलिए दु:ख क्यों करूँ। सन्त सोच में पड़ गया। लेकिन अभी और भी दो लोग बाकी थे। राजकुमार की माता और पत्नी। सन्त ने सोचा कि ये दो व्यक्ति तो जरूर व्याकुल होंगे। लेकिन वहाँ से भी वैसा ही उत्तर पाकर सन्त आश्चर्य में पड़ गया। उसे अपने आप पर ही विश्वास नहीं हो रहा था कि वह सच देख रहा है। आखिर हारकर उसने अपने आने का उद्देश्य और राजकुमार के जिन्दा होने की बात सबको सुना दी। राजकुमार ने वापस आकर अपना राज्यभाग संभाला और हर चीज़ पहले की तरह चलती रही।

**आध्यात्मिक भाव** – मोह पाँच विकारों में से एक है। वह हमारी शान्ति को छीन लेता है। परखने की शक्ति को खत्म कर देता है। मोह सच्चाई को खत्म करता है। जिसमें मोह है उसमें बुद्धिमानी नहीं हो सकती। बाबा इस कथा से शिक्षा देना चाहते हैं कि ना हमें दूसरों में मोह हो और ना ही दूसरों का हममें मोह हो। तब ही हम विश्व के मालिक बन सकते हैं।

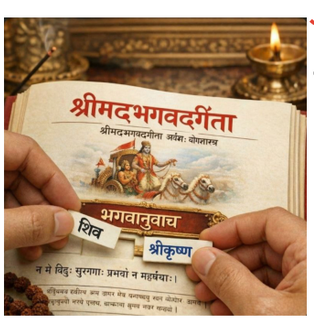

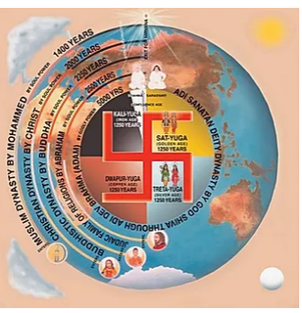


प्रीत ही टूट गई है। यह तो परमात्मा ने ही आकरके सहज योग सिखलाया और दुनिया को बदलाया, दुनिया बदलती रहती है। युग फिरते रहते हैं। इस ड्रामा के चक्र को अभी तुम समझ गये हो। मनुष्य कुछ नहीं जानते। सतयुग के देवी-देवताओं को भी नहीं जानते। सिर्फ देवताओं की निशानियाँ रह गई हैं, तो बाप समझाते हैं, हमेशा ऐसे समझो हम शिवबाबा के हैं। शिवबाबा हमको पढ़ाते हैं। शिवबाबा, इस ब्रह्मा द्वारा हमेशा शिक्षा देते हैं। शिवबाबा की याद में फिर बहुत मज़ा आता रहेगा।

How lucky and Great we are...!

m.m.m....imp.

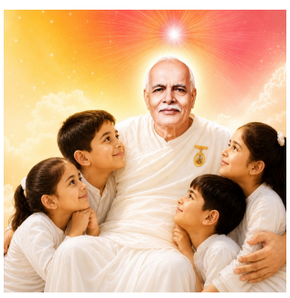

ऐसा गॉड फादर कौन? वह फादर भी है, टीचर भी है, सतगुरू भी है। कई बाप बच्चों को पढ़ाते भी हैं तो वह जरूर कहेंगे हमारा यह फादर, टीचर है परन्तु वह फादर गुरू भी हो, ऐसे नहीं होते हैं। हाँ टीचर हो सकता है। फादर को गुरू कभी नहीं कहेंगे। इनका (बाबा का) फादर टीचर भी था, पढ़ाते थे। वह है हद का फादर टीचर। यह है बेहद का फादर टीचर। तुम अपने को गॉडली स्टूडेन्ट समझो तो भी अहो सौभाग्य। गॉड फादर पढ़ाते हैं, कितना क्लीयर है। तो कितना मीठा बाबा है।

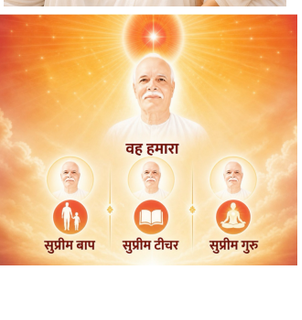

19-06-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

मीठी चीज़ को याद किया जाता है। जैसे आशिक-माशूक का प्यार होता है। उनका विकार के लिए प्यार नहीं होता है। बस एक दो को देखते रहते हैं। तुम्हारा फिर है आत्माओं का परमात्मा बाप के साथ योग। आत्मा कहती है बाबा कितना ज्ञान का सागर, प्रेम का सागर है। इस पतित दुनिया, पतित शरीर में आकर हमको कितना ऊंच बनाते हैं। गायन भी हैं - मनुष्य से देवता किये करत न लागी वार। सेकेण्ड में वैकुण्ठ में जाते हैं। सेकेण्ड में मनुष्य से देवता बन पड़ते हैं। यह है एम आब्जेक्ट। उसके लिए पढ़ाई करनी चाहिए। गुरू नानक ने भी कहा है ना मूत पलीती कपड़ धोए... लक्ष्य सोप है ना। बाबा कहते हैं मैं कितना अच्छा धोबी हूँ। तुम्हारे वस्त्र, तुम्हारी आत्मा और शरीर कितना शुद्ध बनाता हूँ। तो इनको (दादा को) कभी याद नहीं करना है। यह सारा कार्य शिवबाबा का है, उनको ही याद करो। इनसे मीठा वह है। आत्मा को कहते हैं तुमको इन आंखों से यह ब्रह्मा का रथ देखने में आता है परन्तु तुम याद शिवबाबा को करो। शिवबाबा इनके द्वारा तुमको कौड़ी से हीरे

REFERENCE
... ग्रंथ में गाया हुआ है – मनुष्य से देवता किये करत न लागी वार।
परन्तु मनुष्यों की बुद्धि चलती नहीं ...

SOURCE
साकार मुरली (आसादीवार, गुरुग्रन्थ साहब)

भगवान को मनुष्य से देवता बनाने में ज्यादा देर नहीं लगती

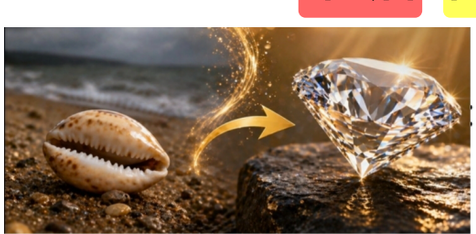

जैसा बना रहे हैं । अच्छा!

मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा का याद-प्यार और गुडमार्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते।

मेरे मीठे ते मीठे बाबा...

## धारणा के लिए मुख्य सार:-

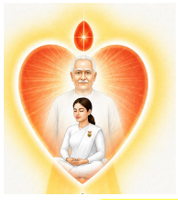

1) बाप के दिल रूपी तख्त पर जीत पाने का पुरुषार्थ करना है। परिवार में ट्रस्टी रहकर प्यार से सबको चलाना है। मोहजीत बनना है।

2) योगबल से आत्मा को स्वच्छ बनाना है। इन आंखों से सब कुछ देखते हुए याद एक बाप को करना है। यहाँ फूल हार स्वीकार न कर खुशबूदार फूल बनना है

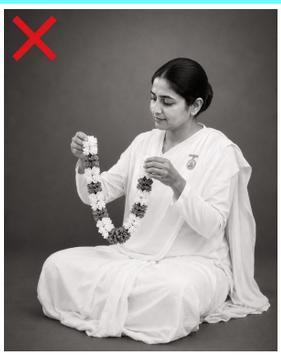

Method/Process/Instrument

कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन..

19-06-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

# वरदान:- प्रालब्ध की इच्छा को त्याग अच्छा पुरुषार्थ करने वाले श्रेष्ठ पुरुषार्थी भव

Outcome/Output/Result

Finale Achievement

Definition of

श्रेष्ठ पुरुषार्थी उन्हें कहा जाता है जो पुरुषार्थ की प्रालब्ध को भोगने की इच्छा नहीं रखते।

जहाँ इच्छा है वहाँ स्वच्छता खत्म हो जाती है और सोचता (सोचने वाले) बन जाते हैं।

समझा?

जो यहाँ ही प्रालब्ध भोगने की इच्छा रखते हैं वह अपनी भविष्य कमाई जमा होने में कमी कर देते हैं इसलिए इच्छा के बजाए अच्छा शब्द याद रखो।

Characteristics of

श्रेष्ठ पुरुषार्थी सदा फ्लोलेस बनने का पुरुषार्थ करते हैं, किसी भी बात में फेल नहीं होते।

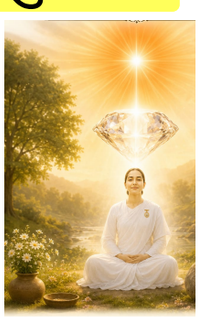

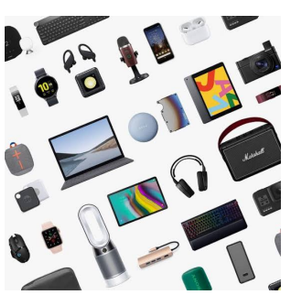

स्लोगन:- साधन कमल पुष्प बनकर यूज़ करो क्योंकि ये आपके कर्मयोग का फल हैं।

ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

# ये अव्यक्त इशारे -

## सदा हर्षित रहने के लिए

## अपनी नेचर को सरल बनाओ, सहनशील बनो।

Characteristics of

सर्वस्व त्यागी बच्चों में मुख्य सरलता और सहनशीलता का गुण अवश्य होगा।

ऐसे बच्चे स्वयं हर्षित रहते और सर्व को आकर्षित करते हैं। वे एक दो के स्नेही बन जाते हैं।

अगर सरलता नहीं तो स्नेह भी नहीं हो सकता।

जैसे साकार रूप में देखा जितना ही नॉलेजफुल उतना ही सरल स्वभाव। बुजुर्ग का बुजुर्ग, बचपन का बचपन।

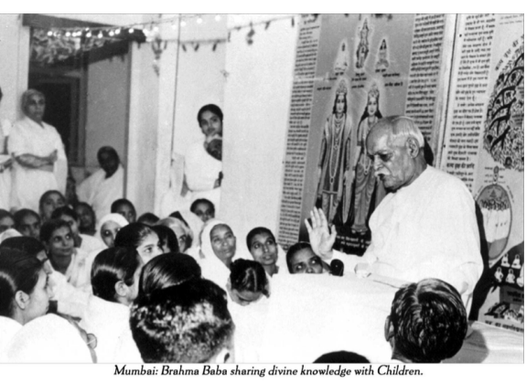

Mumbai: Brahma Baba sharing divine knowledge with Children.

Brahma Baba playing with a baby.

*If you wish to stay connected, Here is the link*

TELEGRAM

WhatsApp

WORLD WIDE WEB

BKdrluhar

अव्यक्त बापदादा:

वरदान का फल निकालने के लिए बार-बार वरदान को स्मृति में लाओ। स्मृति स्वरूप के स्थिति में स्थित रहो।

AV: 30/11/2009
Revise: 12/4/26

All वरदान slogans May 26 → **Click**

All अव्यक्त इशारे May 26 → **Click**

All वरदान, slogans and अव्यक्त इशारे At Single place → **Click**

अव्यक्त बापदादा:

आजकल के जमाने के हिसाब से तो बातें बहुत बदलती जाती हैं। गवर्मेन्ट के कायदे भी बदलने हैं, मनुष्यों की वृत्ति भी बदलनी है। तो हर एक के जीवन में व्यर्थ बातें तो आनी ही हैं, तो व्यर्थ को समाप्त करने के लिए समर्थ संकल्प चाहिए। वेस्ट को खत्म करने के लिए बेस्ट संकल्प चाहिए। तो रोज़ की मुरली में जो वरदान, स्लोगन आता है उसे सुनो। यह वरदान ही श्रेष्ठ संकल्प है। जब व्यर्थ आवे तो श्रेष्ठ संकल्प मन को चाहिए। मन खाली नहीं रह सकता है। मन को कुछ न कुछ संकल्प चाहिए। तो व्यर्थ वेस्ट को बेस्ट करने के लिए आपको यह वरदान और स्लोगन आदि के शब्द मन को चेंज करने के लिए चाहिए।

*Remedy*

*Subtle Psychology*

AV: 15/03/2010
Revise: 31/05/2026

अभी बापदादा ने देखा कि बच्चों को माया भी अब तक छोड़ती नहीं है उनका भी प्यार है। और आजकल दो रूपों में विशेष माया भी चांस लेती है। दो रूप में आती है - एक व्यर्थ संकल्प और दूसरा कहीं-कहीं कभी कभी यह भी लहर है जो मैंने किया वा सोचा मैं ही राइट हूँ मैं कम नहीं हूँ। यह लहर फैली हुई है - मैं ही राइट हूँ लेकिन जो कनेक्शन में आते हैं या निमित्त बने हुए हैं वह भी आपके विचार को साथ देते हैं! दूसरों की भी वेरीफिकेशन मिलनी चाहिए।

*Attention Please..!*

यह व्यर्थ संकल्प टाइम वेस्ट करते हैं। इसलिए बापदादा रोज की मुरली मनन करने के लिए सेवा करने के लिए होमवर्क में रोज देते हैं। अगर मनन करो या मनन करते-करते मगन हो जाओ तो यह रोज का होमवर्क मन को बिजी करने का साधन है।

*Example*

सुनना और मनन करना या मगन हो जाना यह बापदादा रोज का होमवर्क इसीलिए देता है। जैसे बच्चों को होमवर्क इतना ज्यादा दे देते हैं जो उनकी बुद्धि करने में बिजी रहे। ऐसे रोज की मुरली उसमें चार ही सबजेक्ट का होमवर्क है। मन्सा का भी है वाणी का भी है कर्म का भी अटेन्शन और दिव्यता का इशारा होमवर्क है। तो होमवर्क में बिजी रहेंगे तो व्यर्थ संकल्प के आने की मार्जिन नहीं रहेगी।

*समझा?*

इस विधि को अपनाते रहेंगे तो व्यर्थ संकल्प स्वत: ही आपसे विदाई ले जायेंगे
क्योंकि बापदादा ने देखा याद की यात्रा पर सभी का नम्बरवार अटेन्शन है वाचा सेवा में भी अटेन्शन है। लेकिन अभी अपने संस्कार या दूसरों के संस्कार को परिवर्तन करना यह स्वभाव संस्कार जिसको रॉयल रूप में आप कहते हो नेचर मेरी नेचर है भाव नहीं है नेचर है यह धारणा की सबजेक्ट अभी भी रॉयल रूप में आती रहती है। तो बापदादा आजकल यही इशारा देते हैं कि जो भी धारणाओं में कमी होती है उसको अभी विशेष अटेन्शन दो।

AV: 24/10/2010

Revise: 14/06/2026

ओम शांति ,
1 जून से टीम हाइलाइटेड मुरली ने एक नई पहल शुरू की है इस Mind map के रूप में।

इस नई पहल का उद्देश्य यह है कि
आप दिन में कर्म करते हुए या ट्रैवलिंग करते हुए कहीं पर भी, थोड़े से ही समय में ज्ञान,योग,धारणा और सेवा जो हमारे चार मुख्य सब्जेक्ट है उसके main Points को Quickly Revise कर सके और उसका मंथन करते हुए बाबा की याद में एवं स्वदर्शन चक्र फिराने में डूबे रह सके जिससे कि व्यर्थ के आने की कोई मार्जिन ही न रहे।

मीठे बापदादा हमसे चाहते है कि "मेरा हर एक बच्चा व्यर्थ से मुक्त बन जाए।" और व्यर्थ मिटाने का सबसे सरल साधन है निरन्तर समर्थन चिन्तन। और मुरली है सर्व समर्थ साधन - क्योंकि मुरली है सर्व शक्तिमान शिवबाबा का मन। तो मुरली के मंथन में व्यस्त रहना अर्थात उस Supreme powerhouse से अपने मन की तार को जोड़ना।

चूं की यह एकदम नई सेवा है तो आप अपना feedback अवश्य भेजें ताकि Team इस सेवा का एनालिसिस कर के सेवा में improvement कर सके एवं इस सेवा की दिशा को भी जान सके (सेवा जिस उद्देश से शुरू की है वो सार्थक हो रहा है कि नहीं)।

आपका Feedback इस गूगल फॉर्म में submit कीजिए।

इस mind map में,
मुरली की Main Body को ही ध्यान में लिया गया है।
अर्थात सार,प्रश्नोत्तर,धारणा, वरदान, स्लोगन ,अव्यक्त इशारों को include नहीं किया है।

SM: 19/06/2026

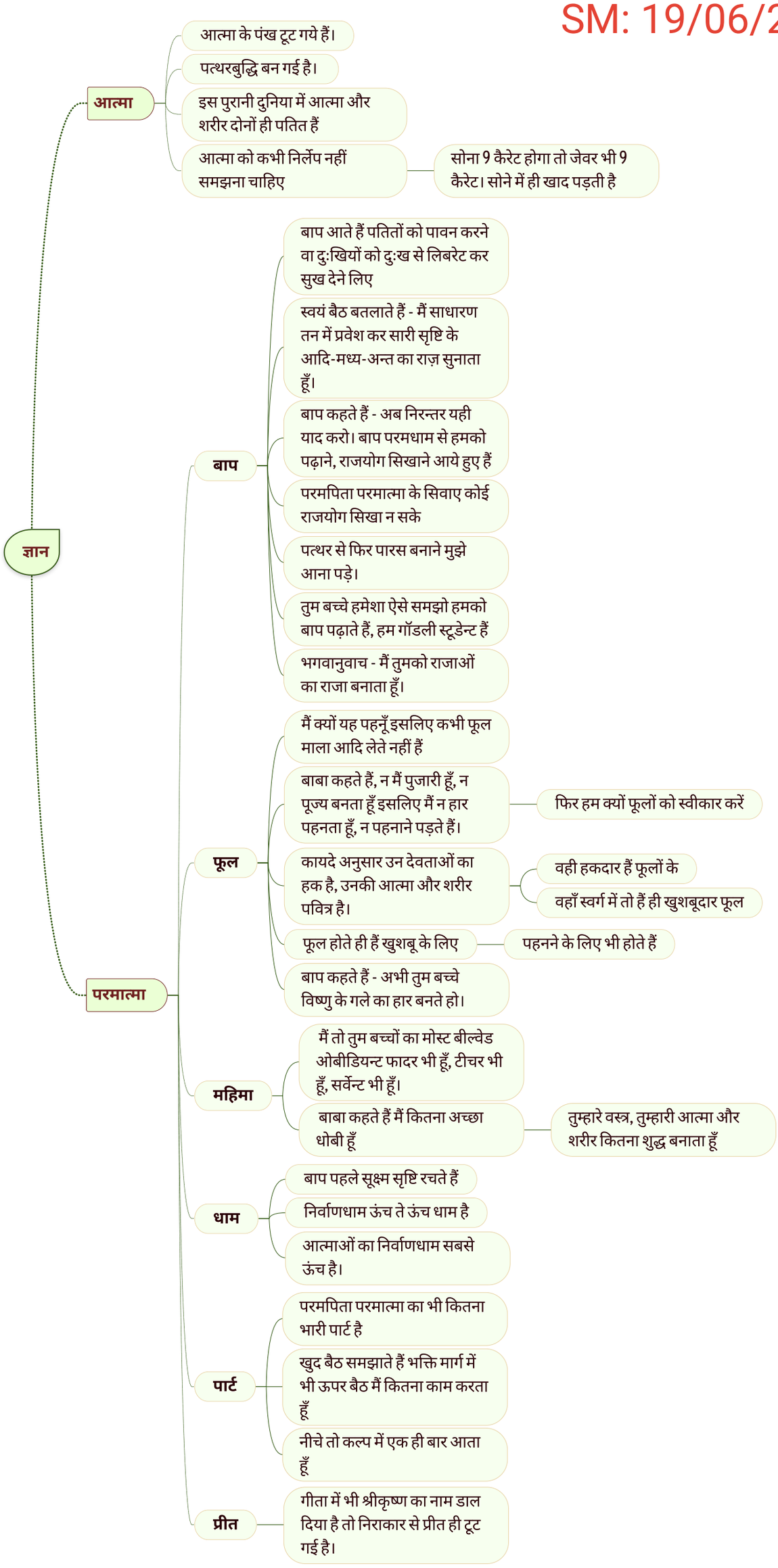
ज्ञान
आत्मा
आत्मा के पंख टूट गये हैं।
पत्थरबुद्धि बन गई है।
इस पुरानी दुनिया में आत्मा और शरीर दोनों ही पतित हैं
आत्मा को कभी निर्लेप नहीं समझना चाहिए
सोना 9 कैरेट होगा तो जेवर भी 9 कैरेट। सोने में ही खाद पड़ती है
परमात्मा
बाप
बाप आते हैं पतितों को पावन करने वा दुःखियों को दुःख से लिबरेट कर सुख देने लिए
स्वयं बैठ बतलाते हैं - मैं साधारण तन में प्रवेश कर सारी सृष्टि के आदि-मध्य-अन्त का राज़ सुनाता हूँ।
बाप कहते हैं - अब निरन्तर यही याद करो। बाप परमधाम से हमको पढ़ाने, राजयोग सिखाने आये हुए हैं
परमपिता परमात्मा के सिवाए कोई राजयोग सिखा न सके
पत्थर से फिर पारस बनाने मुझे आना पड़े।
तुम बच्चे हमेशा ऐसे समझो हमको बाप पढ़ाते हैं, हम गॉडली स्टूडेन्ट हैं
भगवानुवाच - मैं तुमको राजाओं का राजा बनाता हूँ।
फूल
मैं क्यों यह पहनूँ इसलिए कभी फूल माला आदि लेते नहीं हैं
बाबा कहते हैं, न मैं पुजारी हूँ, न पूज्य बनता हूँ इसलिए मैं न हार पहनता हूँ, न पहनाने पड़ते हैं।
फिर हम क्यों फूलों को स्वीकार करें
कायदे अनुसार उन देवताओं का हक है, उनकी आत्मा और शरीर पवित्र है।
वही हकदार हैं फूलों के
वहाँ स्वर्ग में तो हैं ही खुशबूदार फूल
फूल होते ही हैं खुशबू के लिए
पहनने के लिए भी होते हैं
बाप कहते हैं - अभी तुम बच्चे विष्णु के गले का हार बनते हो।
महिमा
मैं तो तुम बच्चों का मोस्ट बील्वेड ओबीडियन्ट फादर भी हूँ, टीचर भी हूँ, सर्वेन्ट भी हूँ।
बाबा कहते हैं मैं कितना अच्छा धोबी हूँ
तुम्हारे वस्त्र, तुम्हारी आत्मा और शरीर कितना शुद्ध बनाता हूँ
धाम
बाप पहले सूक्ष्म सृष्टि रचते हैं
निर्वाणधाम ऊंच ते ऊंच धाम है
आत्माओं का निर्वाणधाम सबसे ऊंच है।
पार्ट
परमपिता परमात्मा का भी कितना भारी पार्ट है
खुद बैठ समझाते हैं भक्ति मार्ग में भी ऊपर बैठ मैं कितना काम करता हूँ
नीचे तो कल्प में एक ही बार आता हूँ
प्रीत
गीता में भी श्रीकृष्ण का नाम डाल दिया है तो निराकार से प्रीत ही टूट गई है।

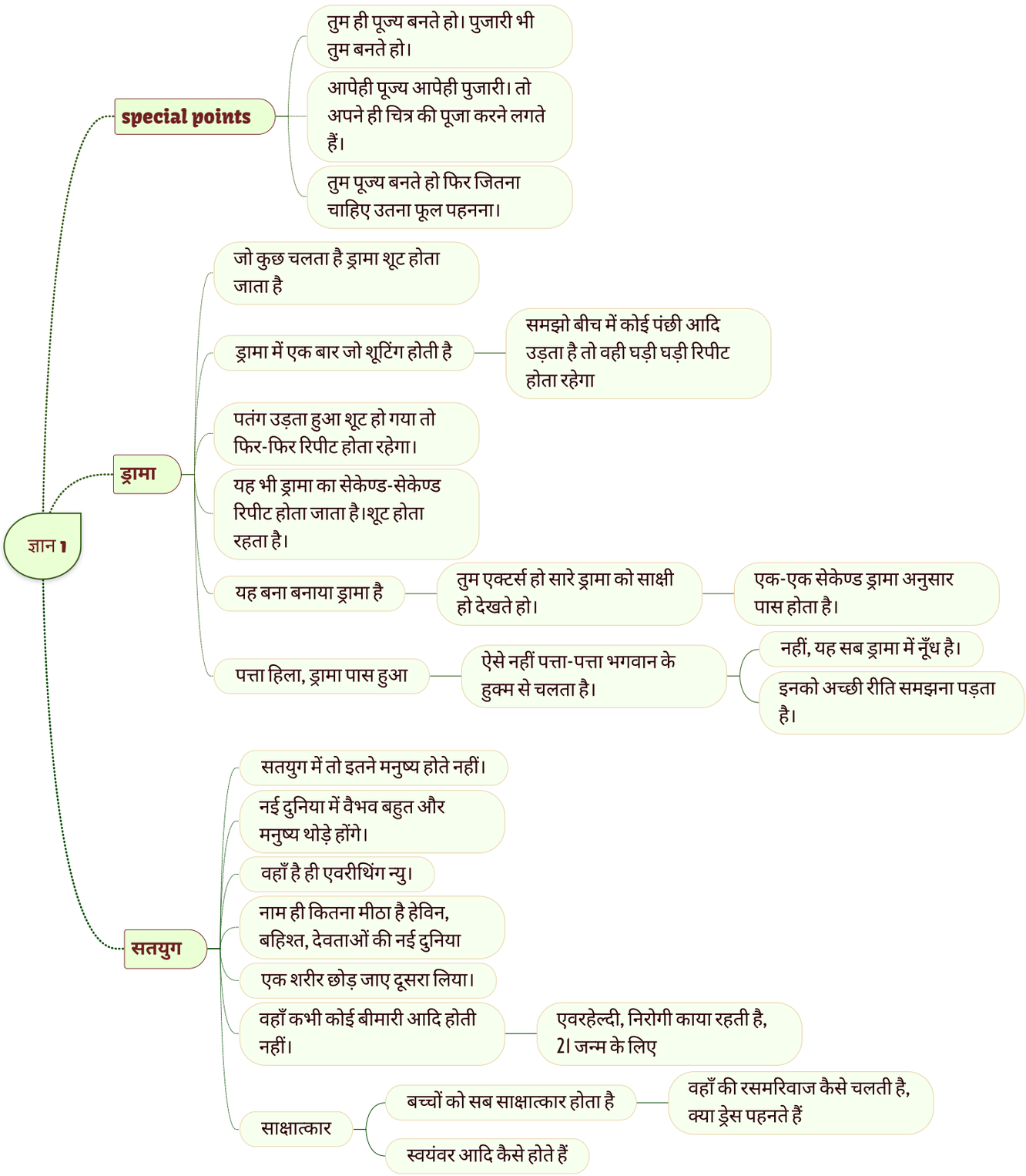
ज्ञान 1
special points
तुम ही पूज्य बनते हो। पुजारी भी तुम बनते हो।
आपेही पूज्य आपेही पुजारी। तो अपने ही चित्र की पूजा करने लगते हैं।
तुम पूज्य बनते हो फिर जितना चाहिए उतना फूल पहनना।
ड्रामा
जो कुछ चलता है ड्रामा शूट होता जाता है
ड्रामा में एक बार जो शूटिंग होती है
समझो बीच में कोई पंछी आदि उड़ता है तो वही घड़ी घड़ी रिपीट होता रहेगा
पतंग उड़ता हुआ शूट हो गया तो फिर-फिर रिपीट होता रहेगा।
यह भी ड्रामा का सेकेण्ड-सेकेण्ड रिपीट होता जाता है।शूट होता रहता है।
यह बना बनाया ड्रामा है
तुम एक्टर्स हो सारे ड्रामा को साक्षी हो देखते हो।
एक-एक सेकेण्ड ड्रामा अनुसार पास होता है।
पत्ता हिला, ड्रामा पास हुआ
ऐसे नहीं पत्ता-पत्ता भगवान के हुक्म से चलता है।
नहीं, यह सब ड्रामा में नूँध है।
इनको अच्छी रीति समझना पड़ता है।
सतयुग
सतयुग में तो इतने मनुष्य होते नहीं।
नई दुनिया में वैभव बहुत और मनुष्य थोड़े होंगे।
वहाँ है ही एवरीथिंग न्यु।
नाम ही कितना मीठा है हेविन, बहिश्त, देवताओं की नई दुनिया
एक शरीर छोड़ जाए दूसरा लिया।
वहाँ कभी कोई बीमारी आदि होती नहीं।
एवरहेल्दी, निरोगी काया रहती है, 21 जन्म के लिए
साक्षात्कार
बच्चों को सब साक्षात्कार होता है
वहाँ की रसमरिवाज कैसे चलती है, क्या ड्रेस पहनते हैं
स्वयंवर आदि कैसे होते हैं

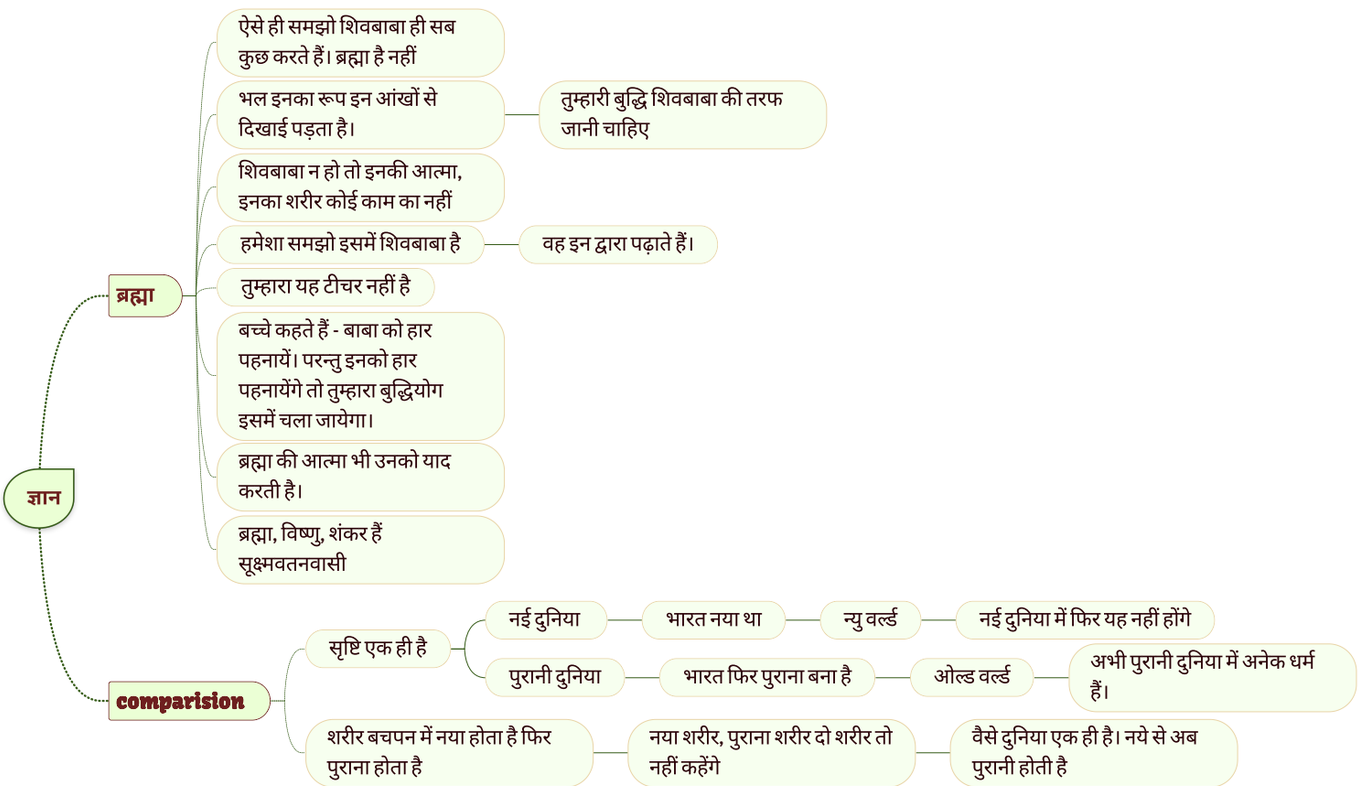
ज्ञान
ब्रह्मा
ऐसे ही समझो शिवबाबा ही सब कुछ करते हैं। ब्रह्मा है नहीं
भल इनका रूप इन आंखों से दिखाई पड़ता है।
तुम्हारी बुद्धि शिवबाबा की तरफ जानी चाहिए
शिवबाबा न हो तो इनकी आत्मा, इनका शरीर कोई काम का नहीं
हमेशा समझो इसमें शिवबाबा है
वह इन द्वारा पढ़ाते हैं।
तुम्हारा यह टीचर नहीं है
बच्चे कहते हैं - बाबा को हार पहनायें। परन्तु इनको हार पहनायेंगे तो तुम्हारा बुद्धियोग इसमें चला जायेगा।
ब्रह्मा की आत्मा भी उनको याद करती है।
ब्रह्मा, विष्णु, शंकर हैं सूक्ष्मवतनवासी
comparision
सृष्टि एक ही है
नई दुनिया
भारत नया था
न्यु वर्ल्ड
नई दुनिया में फिर यह नहीं होंगे
पुरानी दुनिया
भारत फिर पुराना बना है
ओल्ड वर्ल्ड
अभी पुरानी दुनिया में अनेक धर्म हैं।
शरीर बचपन में नया होता है फिर पुराना होता है
नया शरीर, पुराना शरीर दो शरीर तो नहीं कहेंगे
वैसे दुनिया एक ही है। नये से अब पुरानी होती है

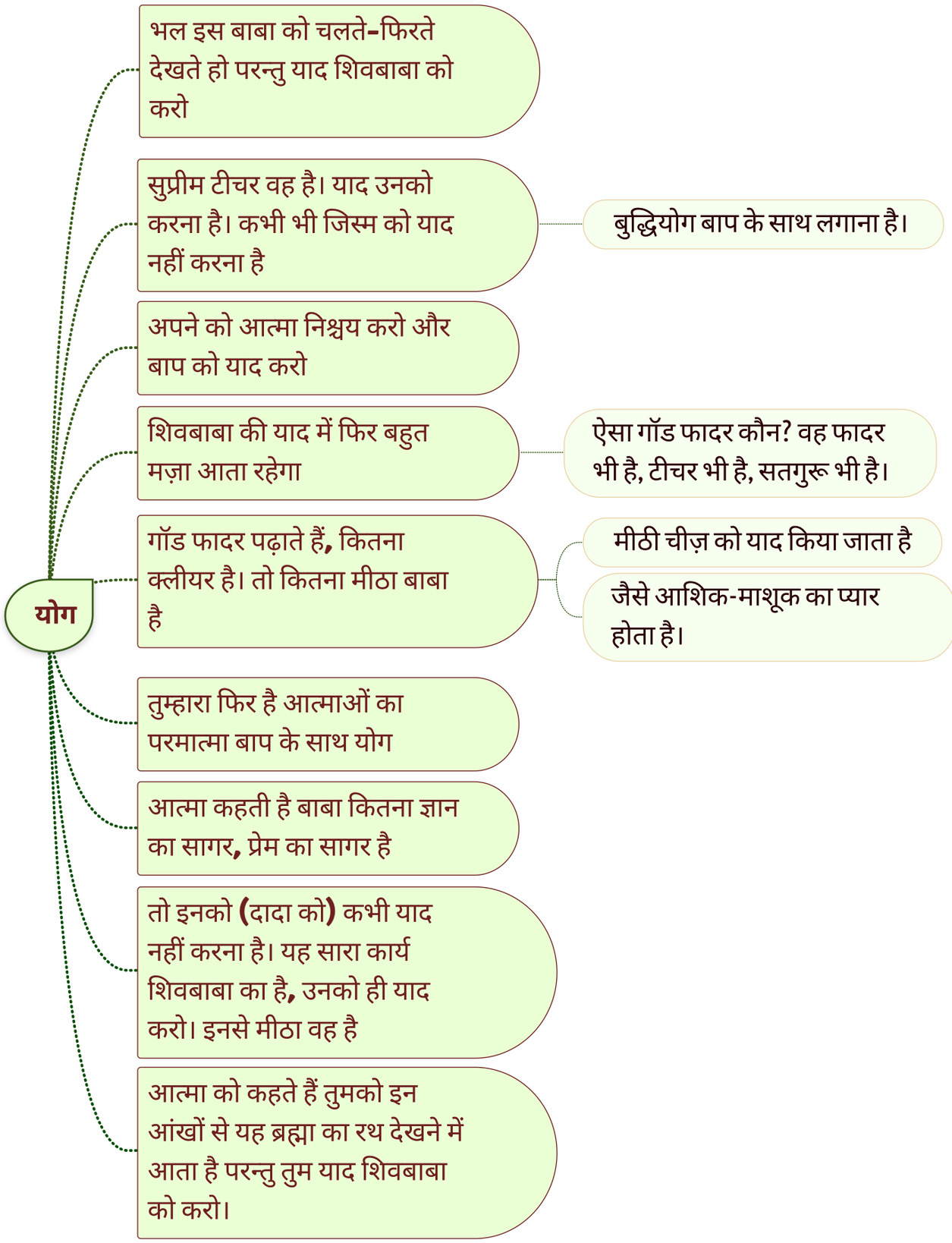

**योग**

- भल इस बाबा को चलते-फिरते देखते हो परन्तु याद शिवबाबा को करो
- सुप्रीम टीचर वह है। याद उनको करना है। कभी भी जिस्म को याद नहीं करना है
  - बुद्धियोग बाप के साथ लगाना है।
- अपने को आत्मा निश्चय करो और बाप को याद करो
- शिवबाबा की याद में फिर बहुत मज़ा आता रहेगा
  - ऐसा गॉड फादर कौन? वह फादर भी है, टीचर भी है, सतगुरू भी है।
- गॉड फादर पढ़ाते हैं, कितना क्लीयर है। तो कितना मीठा बाबा है
  - मीठी चीज़ को याद किया जाता है
  - जैसे आशिक-माशूक का प्यार होता है।
- तुम्हारा फिर है आत्माओं का परमात्मा बाप के साथ योग
- आत्मा कहती है बाबा कितना ज्ञान का सागर, प्रेम का सागर है
- तो इनको (दादा को) कभी याद नहीं करना है। यह सारा कार्य शिवबाबा का है, उनको ही याद करो। इनसे मीठा वह है
- आत्मा को कहते हैं तुमको इन आंखों से यह ब्रह्मा का रथ देखने में आता है परन्तु तुम याद शिवबाबा को करो।

## धारणा

- बाप बार-बार कहते हैं देह-अभिमान छोड़ तुम आत्म-अभिमानी बनो और आरगन्स द्वारा शिक्षा धारण करो
- बाप बैठ समझाते हैं अब इस शरीर को याद नहीं करो।
- फूलों को तुम भी स्वीकार नहीं कर सकते हो
- जिन्होंने जितना कल्प पहले पुरुषार्थ किया है, अब करते हैं और करने लग पड़ेंगे।
  - नम्बरवार तुमको तख्त पर बैठना है
- तुम बच्चों को भी मात-पिता पर जीत पानी है
- पुरुषार्थ इतना करो, जो नर से नारायण बनो
- बाप तो बच्चों को मेहनत कर लायक बनाते हैं, तख्तनशीन बनाने लिए
  - इसलिए कहते हैं, अब हमारे दिल रूपी तख्त पर जीत पहनने से भविष्य के तख्तनशीन बनेंगे।
- तुम्हें माया को जीतने का पूरा-पूरा पुरुषार्थ करना है।
- बच्चों आदि को भी भल प्यार से चलाओ परन्तु ट्रस्टी होकर रहो।
- बाप समझाते हैं, हमेशा ऐसे समझो हम शिवबाबा के हैं
- तुम अपने को गॉडली स्टूडेन्ट समझो तो भी अहो सौभाग्य
- यह है एम आब्जेक्ट।
  - सेकेण्ड में वैकुण्ठ में जाते हैं। सेकेण्ड में मनुष्य से देवता बन पड़ते हैं।
    - उसके लिए पढ़ाई करनी चाहिए